विचार बिन्दु

जब तक हम स्वयं निरपराध न हों तब तक दूसरों पर कोई आक्षेप सफलतापूर्वक नहीं कर सकते। –सरदार पटेल

घर जमाई विधान और परिपाटी बने- महिला सम्मान व सशक्तिकरण की तरफ अब नई सोच और आखिरी कदम

शीर्षक पढ़ने पर और दूल्हे के घर–जमाई बनने से अनेक पाठक बौखला जाएंगे जैसे इस परिवर्तन से वे ही सर्वाधिक प्रवाभित होंगे। पाठकों का चौंकना स्वावाभिक है नई सामाजिक पद्धति से रूबरू होने से बहुतों को डर लगता है। कारण लेख एक ऐसे सामाजिक परिवर्तन की परिपाटी की तरफ ले जाने वाला है जिसके लिए कोई अभ्यस्त भी नहीं और न मानसिक रूप से तैयार। परन्तु समाज परिवर्तन यदि चाहता है जिससे महिला का घरों और समाज में सम्मान और सुरक्षा तो बढे ही अपने चिरपरिचित वातावरण में रहकर मन वांछित शिक्षा ग्रहण करे और सभी प्रकार के कार्य बिना किसी हिचकिचाहट के करने में समर्थ बने। यदि ऐसा होता है तो महिला की जिंदगी अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित और सफल बन सकेगी। प्रकृति और स्वभाव से महिला अपेक्षाकृत पुरुष से अधिक सृजनात्मक होती है।

पूरा मानव समाज आज अपने में इतना खोया हुआ है कि उसे अपने रूटीन और परिवारी कार्यों और व्यवसाय से हट कर अन्य कुछ सूझता ही नहीं। मष्तिष्क में कोई नए विचार उपजते ही नहीं, और जब ऐसा होता है तब कुंठित मानसिकता, अनभिज्ञता और स्वार्थपरता ही उस पर हावी रहती है। तो फिर सभी सामाजिक परिवर्तन और सुधार की जिम्मेदारी क्या सरकार की बनती है? महिला अपराधों में राजस्थान प्रदेश अग्रणी बना हुआ है प्रतिदिन महिलाओं पर घृणित और भीमत्स अपराध घटित होते हैं परंतु समाज कहीं पर भी उद्वेलित नहीं होता। नित ऐसी हृदय विदारक घटनाएं पढ़कर मन व्यथित होता है यह प्रतीत हो रहा है कि मानव अब मानव नहीं राक्षस हो चूका है। हमारे न्यायालय भी अपराधी को दृश्य पटल से कभी ओझल नहीं होने देते, उनकी सोच, ज्ञान और विवेक पर मैं कुछ लिखना उचित नहीं समझता।

इसलिए उपरोक्त विषय पहले तो देश में महिला सशक्तिकरण की तरफ एक अलग नया और आखिरी कदम है और दूसरी तरफ महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध और क्रूरता से प्रेरित जघन्य से जघन्य कृत्यों की सोच को बदलने का है। मैं समझता हूँ कि यह विषय लोगों की जुवान पर छाया रहेगा, नतीजा कुछ भी हो।

इसी क्रम में विचार कर यह विषय समाज को देने का निर्णय लिया ताकि इस मुद्दे पर समाज, सरकार, विधि निर्माता और न्यायलय आदि सभी मंथन व् सम्बाद करे सकें। और एक ऐसी सामाजिक पद्धति विकसित कर लागू करें जिससे नारी के प्रति सम्मान, सौहार्द और बिना भेदभाव के समाज बने और वर्तमान के दृश्य को पूर्ण रूप से बदल कर सक्रीय संबल, स्नेही, परोपकारी और सौहार्द परक परिवार विकसित हों। अन्यथा आज की सांख्यकी बता रही है कि देश के संजीदा युवा और युवतियां विवाह बंधन से अधिकाधिक विमुख होते जा रहे हैं। ऐसी प्रवर्ति से देश में जनसँख्या का सापेक्षिक संतुलन बिगड़ जायगा जो वांछनीय नहीं कहा जा सकता।

मैं राजस्थान सरकार का उपकार मानता हूँ कि उसने जन–आधार कार्ड परिवार की मुखिया महिला के नाम बनाया और अन्य सदस्यों को उससे जोड़ दिया। विभिन्न प्रकार की सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए यह कार्ड बहुत उपयोगी है। भविष्य में यदि महिला की मौत हो जाती है उसके बाद पता नहीं कार्ड की वैध्यता जारी रहेगी या फिर बचे हुए सदस्यों को नया कार्ड बनवाना होगा? स्तिथि अभी स्पष्ट नहीं है।

महिलाओं के प्रति अपराधों से नित अखबार भरे रहते हैं। ऐसा लगता है जिस औरत के पेट से पुरुष का जन्म हुआ है और जिसके स्तनों का दूध आरंभ खाद्य के रूप में पिया है जिससे उसके शरीर और मस्तिष्क विकसित हो सके हैं और इस प्रक्रिया में न्युरोहोर्मोनल दुलार जो उसे मिला है जिसकी कीमत आंकने में किसी की बिसात नहीं।

महिलाओं के प्रति अपराधों से नित अखबार भरे रहते हैं। ऐसा लगता है जिस औरत के पेट से पुरुष का जन्म हुआ है और जिसके स्तनों का दूध आरंभ खाद्य के रूप में पिया है जिससे उसके शरीर और मस्तिष्क विकसित हो सके हैं और इस प्रक्रिया में न्युरोहोर्मोनल दुलार जो उसे मिला है जिसकी कीमत आंकने में किसी की बिसात नहीं। वही प्राणी वयस्क होकर माँ स्वरुप महिला के शरीर के किसी धारदार औज़ार से टुकड़े कर बोरी में भर कही निर्जन स्थान में फेंक देता है।

उसने कभी अपने शरीर में फड़कते प्राण को ध्यान नहीं लगाया कि इसको कौन फड़का रहा है? अन्य शरीर में भी वही था जिसे उसने अपने बल से निष्प्राण कर फेंक दिया। यहाँ पर संस्कार व्यवहार और उचित शिक्षा का अभाव ही प्रमुख कारण हैं। विगत कुछ शताब्दिओं से समाज में संस्कृति और शिक्षा का ऐसा घालमेल और पतन हुआ है कि उसको सुधारना हरक्यूलियन या भागीरथी प्रयास ही होगा। दुर्भाग्य से वर्तमान में कोई देव तुल्य भगीरथ सदृश्य बचा ही नहीं जिधर भी देखो दैत्य ही दैत्य भरे पड़े हैं, कुछ देव जैसे लगते तो हैं परन्तु वे भी उजले कपडे पहने भेड़िये अथवा असल में दैत्य ही हैं।

देखने में यह भी आया है कि यदि महिला और पुरुष बरावर पढ़े हुए हों और दोनों ही कमाई भी करते हों फिर भी पुरुष स्वभाववश अपनी धौंस, प्रधानता तथा प्रभुत्व महिला पर बनाये रखना चाहता है ऐसा इसलिए कि उसके माता–पिता ने उसे महिलावर्ग की इज़्ज़त और स्नेही स्वभाव आदि गुण कभी दिए ही नहीं। ऐसे में जरा–जरा सी बात पर टकराव की स्तिथि बनती रहती है। भरपूर और अपनी हैसियत से भी अधिक लड़की के माता–पिता द्वारा धन और स्वचालित उपकरण, फर्नीचर, वस्त्र स्वचालित वाहन आदि दिए जाने पर भी और कहीं अधिक दहेज़ के बहानें, पति और सास से उलाहने सुनने पड़ते हैं कि शादी में तुम लाई क्या थी? ऐसा लालच, स्वार्थपरता और पिता आदि पर उलाहने महिला को बहुत मानसिक कष्ट पहुंचाते हैं। यह पुरुष वर्चस्व की दुष्प्रवर्ति, घटिया मानसिकता सर्वत्र व्याप्त है जो घर जमाई दामाद होने पर कम या स्वतः समाप्त हो जायेगी। परिवर्तित परिपाटी चलन में आने पर और भी कई अच्छे बदलाव दृष्टिगोचर हो सकते हैं।

इस सामाजिक बदलाव को पुरुषवर्ग आसानी से स्वीकार नहीं करेगा, फिर भी प्रबुद्ध वर्ग, समाज शास्त्री और सरकार इस पर मंथन कर सावधानी से इसे लागू करे तो मुझे इसकी स्वीकारिता में कोई संशय नहीं लगता। वर्तमान में भी सहअस्तित्व के लिए महिला को ही प्रयास करने होते हैं और इसके लिए बहुधा उसे अपमान का घूँट भी पीना पड़ता है। आखिरकार सामाजिक बदलाव तो पूर्व में भी किये जाते रहे हैं आगे भी होते रहेंगे। परिवर्तित पद्धति में पुरुष को ससुराल में सदैव शालीनता का प्रयास ही करना होगा, अन्यथा व्यवहार उसे लोगों की नजरों में गिरा देगा। प्रॉपर्टी या विरासत के बटवारे के कई टकराव काफी सीमा तक या तो समाप्त हो जायेंगे या कमजोर पड़ जायेंगे। क्योंकि सभी प्रॉपर्टी माँ–बाप से पुत्री को ही हस्तांतरित होगी।

परिवार में पुत्र जन्म की कामना या लालसा में व्यापक कमी आएगी और मादा भ्रूण और बालिका हत्या जैसी सोच पर लगाम लगेगी। माता–पिता के साथ ही रहकर बालिका अधिक खुलेपन के कारण बिना किसी हिचक के कोई भी कार्य करने में और शिक्षा ग्रहण करने में अधिक समर्थ बनेगी। अभी लड़की के लिये प्रयुक्त पराये धन की अवधारणा विलुप्त होती नजर आएगी।

सुझाई गयी रीति पर रिवाज (मोडलीटीस) बनाने के लिए संयुक्त प्रयास कर एक सरल प्रणाली विकसित करनी होगी, ताकि सुगमता से शादी विवाह परंपरा ऐसी विकसित हो सके जिससे महिला को प्रमुखता से सामंजस्य बिठाने में सहूलियत रहे। इस प्रक्रिया में विभिन्न महिला आयोग व् अन्य महिला संस्थाएं, महिला विधि विशेषज्ञ, फॅमिली कोर्ट के न्यायाधीश और अन्य सामाजिक कार्य क्षेत्रों में कार्यरत अराजकीय समितियां की भी भागीदारी इसमें सुनिश्चित करनी होगी। जिसमें महिला विमुखीकरण की स्तिथि झलकती हो। आगे और अधिक और व्यापक विमर्श की आवश्यकता है।

–अतिथि सम्पादक,
प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह,
(पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञ महाराणा प्रताप कृषि एवं खाद्य प्रौद्योगिकी वि.वि., उदयपुर-राज.)

जोधपुर की भौगीशैल परिक्रमा : चार धाम की यात्रा के बराबर मिलता है पुण्य

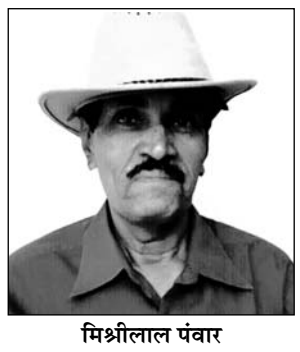

मिश्रीलाल पंवार

जोधपुर में हर 3 साल बाद पुरुषोत्तम मास में होने वाली सात दिवसीय 'भोगिशैल परिक्रमा' यात्रा का अपना अलग ही आध्यात्मिक महत्त्व है। कहते हैं कि इस परिक्रमा में भाग लेने वाले को चार धाम की यात्रा का पुण्य मिलता है। जाने अनजाने में मन, वचन तथा कर्म से हुए पापों से मुक्ति मिलती है। यह यात्रा मोक्ष तथा मनोवांछित फल देने वाली है। इसे मारवाड़ का महाकुंभ भी कहा जाता है। करीब सौ किलोमीटर से ज्यादा लंबी इस धार्मिक यात्रा में हजारों श्रद्धालु शामिल होते हैं। कई बार यात्रियों की संख्या एक लाख से भी अधिक हो जाती है। इसका आयोजन हिन्दू सेवा मण्डल द्वारा किया जाता है। दरअसल जोधपुर के आसपास पहाड़ियों में प्राचीन मन्दिरों तथा संतों की तपोस्थली की भरमार है। जोधपुर में चारों दिशाओं में पहाड़ियों पर स्थित आध्यात्मिक महत्त्व के स्थलों की यात्रा होने से ही इसे 'भौगीशैल परिक्रमा' कहा जाता हैं।

इस यात्रा का प्रथम पड़ाव रातानाडा में होता है। यहां पहाड़ी पर स्थित भगवान गणेश के दर्शन के बाद दूसरे दिन तड़के चार बजे यह पैदल यात्रा आगे के लिए प्रस्थान करती है। उसके बाद चौपासनी, बड़ली, बैद्यनाथ, बेरीगंगा, मंडोर उद्यान में रात्रि पड़ाव रहता है। मार्ग में मण्डलनाथ महादेव सहित अनेकानेक आध्यात्मिक महत्त्व के पावन स्थल आते हैं। जहां दर्शन कर यात्रीगण कष्टों से मुक्ति पाते हैं।

इस भौगीशैल परिक्रमा में जोधपुर की सौ से अधिक स्वयंसेवी संस्था व धार्मिक सामाजिक संगठनों के साथ जिला प्रशासन के सभी विभागों का पूर्ण सहयोग रहता है। परिक्रमा के यात्री जिस भी मार्ग से गुजरते हैं, लोग उनके स्वागत में पलक पांवड़े बिछा देते हैं। जगह–जगह चाय, पानी, नास्ते, फल फ्रूट से मनुहार की होड़ मची रहती है। हिन्दू सेवा मण्डल के सैंकड़ों स्वयं सेवक यात्रियों की सेवा में दिन रात जुड़े रहते हैं। पड़ाव स्थलों पर सामाजिक संगठन तथा स्वयं सेवी संस्थाएं यात्रियों के लिए सस्ता भोजन उपलब्ध कराती है। कई संस्थाएं निःशुल्क भोजन प्रसादी की भी सेवा देती है।

–प्रथम पड़ाव गणेश मंदिर रातानाड़ा : जोधपुर शहर से 5 किमी की दूरी पर स्थित रातानाडा की पहाड़ी पर प्राचीन गणेश मंदिर है। यह मंदिर भगवान गणेश को समर्पित है। पौराणिक कथा के अनुसार इसका अत्यन्त महात्म्य है। शहर में किसी भी घर में मांगलिक कार्य होने पर प्रथम निमंत्रण यहां विराजमान भगवान गणेश को दिया जाता है। गणेश चतुर्थी को यहां हर वर्ष भव्य मेला लगता है। हर बुधवार को भी यहां भक्तों की रेलमपेल रहती है। यहां भगवान गणेश की मूर्ती के दर्शन मात्र से जीव की मनोकामनाएं पूर्ण होती है। यहां की प्रतिमा की ऊंचाई 8 फीट और चौड़ाई 5 फुट है। भौगीशैल परिक्रमा के यात्रियों का प्रथम पड़ाव यहीं रहता है। यहां दर्शन के बाद ही आगे की यात्रा शुरू होती है। गणेश मंदिर के बाद भौगीशैल परिक्रमा के यात्री विभिन्न मार्गों से होकर मसूरिया स्थित बाबा रामदेव के गुरु बालीनाथजी के समाधि स्थल पहुंचते हैं।

–मसूरिया बाबा रामदेव मन्दिर : जोधपुर रेलवे स्टेशन से करीब सात किलोमीटर दूर बाबा रामदेव के गुरु बालीनाथजी का विश्व विख्यात मंदिर है। यह मन्दिर मसूरिया पहाड़ी पर स्थित है। यहां पर श्री पीपा क्षत्रिय समस्त न्याति, मन्दिर ट्रस्ट द्वारा यात्रियों का भव्य स्वागत किया जाता है। साथ ही चाय–पानी की व्यवस्था भी की जाती है। भादो मास में लगने वाले बाबा रामदेव मेले के दौरान लाखों की संख्या में जातरू यहां दर्शन करने देश के विभिन्न क्षेत्रों से आते हैं। परिक्रमा के दूसरे दिन यात्री यहां शीश नवाने पहुंचते हैं। यहां से प्रस्थान कर भौगीशैल परिक्रमा के यात्री चौपासनी पहुंच कर रात्रि विश्राम के लिए पड़ाव डालते हैं।

–चौपासनी में है श्रीनाथजी का विशाल मंदिर : चौपासनी में श्रीनाथजी का विशाल मंदिर है। इसको श्यामबाबा का मंदिर भी कहा जाता है। श्याम मनोहर का मंदिर महाराजा सरदारसिंहजी के समय संवत् 1957 (1900 ई.) में बनवाया गया था। जब औरंगजेब ने मंदिरों को तोड़ने की आज्ञा जारी की तब गोवर्धन पर्वत पर स्थित श्रीनाथजी की मूर्ति को लेकर पुजारी दामोदर और उनके चाचा गोविन्दजी 1669 ई. में जोधपुर आए और चौपासनी में छह माह विश्राम किया। इसके बाद मेवाड़ महाराणा राजसिंह के आग्रह पर पुजारी श्रीनाथ की मूर्ति सीहाड़ लेकर पहुंचे और वहां मंदिर बनवाया तथा मूर्ति स्थापना की। यह स्थान आज नाथद्वारा के नाम से विश्व विख्यात है। यदि उस समय जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह का असामायिक निधन नहीं होता तो श्रीनाथजी चौपासनी में विराजित होते। श्रीनाथजी के मूल विग्रह के चौपासनी से चले जाने के बाद दूसरी मूर्ति स्थापित की गई जिनकी वल्लभ सम्प्रदाय की परम्परानुसार आज भी सेवा पूजा होती है। परिक्रमा के यात्री यहां श्रीनाथजी के दर्शन कर रात भर भजन कीर्तन करते हैं। अगली सुबह बड़ली के लिए प्रस्थान करते हैं। यहां उनका रात्रि पड़ाव रहता है।

–बड़ली भैरू का प्राचीन मन्दिर : जोधपुर से करीब पंद्रह किलोमीटर दूर जैसलमेर रोड़ पर बड़ली नामक गांव है। यहां पर तालाब किनारे भैरूं बाबा का अति प्राचीन मंदिर है। यहां वर्ष भर भक्तों की चहल पहल बनी रहती है। वर्ष में एक बार यहां बड़ा मेला लगता है। भोगीशैल परिक्रमा के यात्रियों के पड़ाव के कारण इस दिन यहां भारी मेला लगता है। यात्रीगण यहां भैरूनाथ के दर्शन कर अपनी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। साथ ही यहां स्थित तालाब में स्नान कर कष्टों से मुक्ति पाते हैं। रात भर सत्संग कर यात्रीगण अगली सुबह प्राचीन वैधनाथ थाम के लिए निकल पड़ते हैं।

–प्राचीन वैधनाथ धाम का आध्यात्मिक महत्त्व : बड़ली रात्रि विश्राम के बाद परिक्रमा के यात्री दुर्गम पहाड़ियों से होते हुए वैधनाथ पहुंचते हैं। यहां रात्रि विश्राम के साथ ही भजन कीर्तन करते वैधनाथ का गुणगान करते हैं। इस स्थान का भी आध्यात्मिक महत्त्व है। जोधपुर शहर से करीब 20 किलोमीटर दूर स्थित पहाड़ियों में स्थित वैद्यनाथ महादेव मंदिर जोधपुर की स्थापना से 340 साल पूर्व का है। तत्कालीन मारवाड़ की राजधानी मंडोर में सरदार नाहरसिंह पड़िहार का शासन था। कहा जाता है कि सरदार नाहरसिंह परम शिव भक्त थे। एक बार उनके पुत्र की तबीयत बहुत खराब हो गई। राज चिकित्सक भी परेशान थे।

चिंतित मुद्रा में बैठे सरदार नाहरसिंह के पास उस समय एक सैनिक घुड़सवार सूचना लाया कि पहाड़ी पर पेड़ के नीचे कोई बुजुर्ग वैद्य विराजे हैं। सरदार नाहरसिंह वैद्यजी को बुलाने में समय व्यर्थ गंवाने के बजाए अपने पुत्र को रथ में बैठाकर वैद्य के पास निकल पड़े और उपचार शुरू करवाया। कुछ ही देर में सरदार के पुत्र को स्वास्थ्य लाभ मिलने लगा। उन्होंने वैद्यराज को प्रणाम कर अपने साथ मंडोर चलने को कहा। लेकिन वे अंतर्ध्यान हो गए। सरदार की समझ में आ गया कि साक्षात महादेव वैद्यराज बनकर प्रकट हुए थे। इसके बाद नाहरसिंह ने उसी जगह विक्रम संवत 1176 में भाद्र मास की पूर्णिमा के दिन मंदिर प्रतिष्ठित किया था।

–बैरी गंगा से बह रही प्राकृतिक जलधारा : वैद्यनाथ से तड़के प्रस्थान कर परिक्रमा के यात्री मंडोर स्थित बेरी गंगा पहुंचते हैं। यहां से बह रही प्राकृतिक जलधारा में स्नान कर यात्रीगण खुद को धन्य समझते हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इसका अस्तित्व पांच हजार वर्ष पुराना माना जाता है। कहा जाता है कि यहां शिवलिंग और भैरु की मूर्ति सहित गंगा का अवतरण हुआ था। बाद में यह स्थान लोप हो जाने से सैंकड़ो सालों तक गुप्त रहा।

पहाड़ियों से निकल रही प्राकृतिक जलधारा से बहुत सी मान्यताएं जुड़ी हैं। बेरी गंगा के प्रमुख मंदिर में स्थापित भैरु की मूर्ति से ही गंगा का प्रवाह निकलने की मान्यता है। कहा जाता है कि यहां कभी पानी नहीं सूखता।

–मन्डोर में रहता है अंतिम पड़ाव : बेरी गंगा में रात्रि विश्राम के बाद भौगीशैल परिक्रमा के यात्री मण्डोर पहुंचते हैं। यहां नागादडी झील में स्नान कर देवदर्शन के लिए देवताओं की साल पहुंचते हैं। बाद में मंडोर के सुन्दर उद्यान का आनंद लेते अजीत पोल, वीरों का दालान, मंदिर, बावड़ी, जनाना महल, एक थम्बा महल, नहर, झील व जोधपुर के विभिन्न महाराजाओं के स्मारकों का अवलोकन कर रात्रि विश्राम के लिए पड़ाव डालते हैं।

परिक्रमा के अंतिम पड़ाव मंडोर के बाद परिक्रमा यात्री सातवें दिन सुबह संतोषी माता मंदिर, कागा तीर्थ शीतला माता मंदिर, शेखावतजी का तालाब हनुमान मंदिर, उम्मेद भवन होते हुए रातानाडा गणेश मंदिर में दर्शन करते हैं। उसके बाद शोभायात्रा के रूप में शहर के भीतरी भागों में स्थित कुंजबिहारी, गंगश्यामजी व घनश्यामजी मंदिर के दर्शन कर यात्रा का समापन होता है। तीन साल पहले पुरुषोत्तम मास कोरोना काल के बीच आया था। इसीलिए तब परिक्रमा को भव्य रूप से आयोजित नहीं किया गया, सिर्फ औपचारिकता ही निभाई गई थी। लेकिन अब 6 साल बाद फिर उसी रूप में इस परिक्रमा को आयोजित करने की तैयारी चल रही है। हिन्दू सेवा मण्डल के सचिव विष्णु चन्द्र प्रजापति ने बताया कि इस बार भौगीशैल परिक्रमा का 27 जुलाई को शुभारंभ तथा 3 अगस्त को समापन होगा।

–मिश्रीलाल पंवार, जोधपुर

रस्सी के सहारे विद्यार्थी जान जोखिम में डालकर नाला पार कर रहे हैं

- **तीन किलोमीटर के लिए 15 किलोमीटर का चक्कर लगाकर विद्यालय जाना पड़ता है**

भीलवाड़ा, (निसं)। कोटड़ी उपखंड क्षेत्र के घेवरिया गांव में बारिश के समय के दौरान गांव के 35 बच्चे स्कूल जाने के लिए अपनी जान जोखिम में डालकर रस्सी के सहारे रपट को पार करते हैं। इन बच्चों को रपट के पार आने जाने को रस्सी के सहारे के सिवाय और कोई चारा नहीं है, जब अधिक बारिश के दौरान रपट अपना रौद्र रूप दिखाता है तो या तो विद्यार्थी विद्यालय नहीं जा पाता या फिर तीन किलोमीटर के लिए 15 किलोमीटर का चक्कर लगाकर विद्यालय जाना पड़ता है।

कांटी ग्राम पंचायत मुख्यालय स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जो घेवरिया गांव से तीन किमी दूर है, विद्यार्थियों को बारिश के दिनों में रस्सी के सहारे जान जोखिम में डालकर रपट को पार करना पड़ता है। स्कूली बच्चे अपना भविष्य संवारने के लिए इस रपट को पार करके स्कूल जाते हैं। ग्राम पंचायत कांटी के अंतर्गत आने वाले इस गांव घेवरिया में लगभग 1200-1300 लोगों की आबादी है, ग्राम पंचायत तक पक्की सड़क का निर्माण है, लेकिन इस मार्ग का एक मात्र रपट जिसमें ना तो पानी निकलने के लिए पाइप डाल रखे और ना ही पक्का निर्माण किया हुआ है, जिस पर बारिश के मौसम में विद्यार्थियों व ग्रामीणों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। जिससे बारिश के दौरान रपट पार करते समय कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। इस संबंध में विद्यालय के द्वारा शिक्षा विभाग, जनप्रतिनिधियों सहित प्रशासनिक अधिकारियों को पत्र भेजकर इस समस्या से अवगत कराया। लेकिन अब तक को समाधान नहीं हुआ है। जिस कारण हर बार बारिश के दौरान विद्यार्थियों को जान जोखिम में डालकर रस्सी के सहारे रपट को पार करके विद्यालय जाना पड़ता है।

जानकारी के अनुसार खाल पर पुलिया निर्माण नहीं होने के चलते प्रति वर्ष विद्यालय में घेवरिया गांव के बच्चों का नामांकन कम होता जा रहा है। ग्रामीण बच्चों और बुजुर्गों को रस्सी के सहारे पीठ पर सवार करके नाला पार कराते हैं। जब अधिक बारिश होती है तो कई दिनों तक बच्चे स्कूल नहीं जा पाते हैं। आवश्यक सामान की खरीदी के लिए ग्रामीणों को गांव से बाहर जाने के लिए भी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीणों ने बताया गांव में जब भी कोई व्यक्ति बीमार हो जाता है तो उस मरीज को खटिया पर लिटा कर ले जाना पड़ता है। गर्भवती महिला को पहले ही गांव से बाहर भेज दिया जाता ताकि बारिश में परेशानी न हो।

रतन लाल बलाई, सरपंच, काँटी का कहना है कि पुलिया नहीं होने के कारण विद्यार्थियों को आने जाने का समस्या का सामना करना पड़ता है पिछले वर्ष भी मैंने अपना निजी साधन लगाकर घेवरिया से हाजीवास व मोडिया खेडा होते हुए विद्यार्थियों को काटी विद्यालय में पहुंचाया। पुलिया निर्माण के लिए डिस्ट्रिक्ट मिनरल फाउंडेशन ट्रस्ट फंड से 4 करोड़ रुपए की राशि स्वीकृत है लेकिन टेंडर नहीं होने के कारण अब तक पुलिया का निर्माण कार्य शुरू नहीं हुआ है।

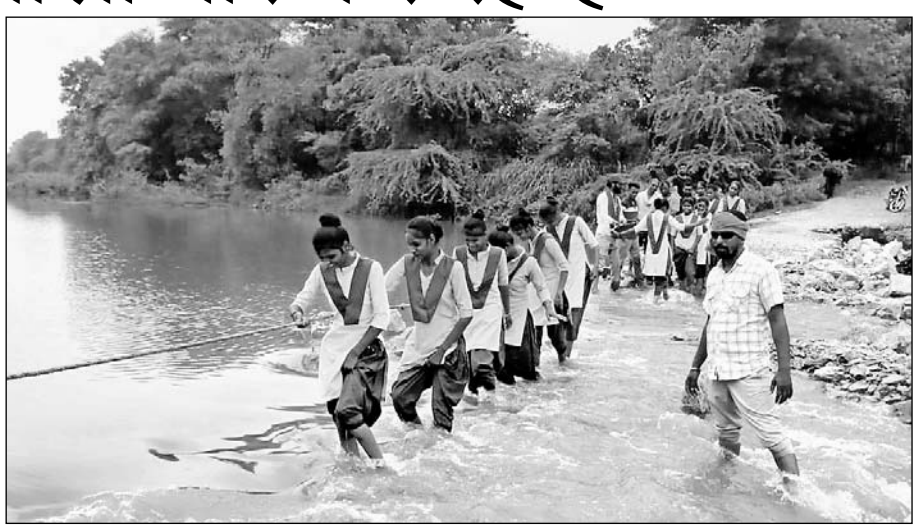

बच्चों और बुजुर्गों को ग्रामीण जन रस्सी के सहारे पीठ पर सवार करके नाला पार कराते हैं।

बस्ती खाली करने के आदेश से लोगों में रोष

- **पाल ग्राम पंचायत में घड़वा नाड़ा में पिछले 70 साल से रह रहे हैं लोग**
- **जमीन खाली करने का अल्टीमेटम मिलने के बाद विरोध जताने जेडीए कार्यालय का घेराव करने पहुंचे**
- **लोगों ने चेतावनी दी कि यदि उनके मकानों को तोड़ा गया तो वे जेडीए के बाहर ही बैठ जाएंगे**

जोधपुर, (कासं)। पाल ग्राम पंचायत के घड़वा नाडी में रहने वाले दलित परिवार के लोगों को जमीन खाली करने का अल्टीमेटम मिलने के बाद विरोध जताने जेडीए कार्यालय का घेराव करने पहुंच गए। जोधपुर शहर के नजदीक पाल ग्राम पंचायत में घड़वा नाड़ा में पिछले 70 साल से रह रहे लोगों को जोधपुर विकास प्राधिकरण (जेडीए) की ओर से खाली करने और अतिक्रमण हटाने का अल्टीमेटम दिया गया है। इस चेतावनी के बाद गुस्साए लोग जेडीए कार्यालय का घेराव करने बुधवार को जोधपुर पहुंचे। यहां नारेबाजी करते हुए विरोध जताया और चेतावनी दी कि यदि उनके मकानों को तोड़ा गया तो वे जेडीए के बाहर ही अनिश्चितकाल के लिए बैठ जाएंगे। चेतना युवा मंडल के बैनर तले सैकड़ों की संख्या में लोग जेडीए कार्यालय पहुंचे।

वीरेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि घड़वा नाडा में करीब 300 घरों की यह बस्ती 70 साल से भी ज्यादा पुरानी है। इस बस्ती में सरकारी योजनाओं से ही मकान बने हुए हैं। स्वच्छ भारत मिशन में शौचालय भी सरकार की राशि से ही बनाए गए। बिजली कनेक्शन भी इन लोगों को मिले हुए हैं और दस्तावेज के रूप में कई रसीदें भी इनके पास मौजूद हैं। लेकिन पिछले कुछ दिनों में जेडीए के कुछ अधिकारी और पटवारियों ने वहां आकर मुनादी करवाई की इस जमीन को खाली कर दिया जाए। जेडीए के अधिकारियों ने इस जमीन को अतिक्रमण बताया है। जल्द ही यहां पर बुलडोजर चलाने की बात भी कही। इस चेतावनी से घबराए लोगों ने जोधपुर कुछ किया और बुधवार को जेडीए कार्यालय का घेराव कर लिया। यहां विरोध जताने आए लोगों ने बताया कि 300 घरों की इस बस्ती में अधिकांश घर दलित समाज के हैं। इसी जमीन पर सरकारी स्कूल भी बना हुआ है। लेकिन इसके बावजूद इस बस्ती को खाली करने का फरमान दिया गया है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 27 जुलाई, 2023

प्र. सावन मास (अधिक), शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, विशाखा नक्षत्र रात्रि 1:58 तक, शुभ योग दिन 1:58 तक, कौलव करण दिन 3:48 तक, चन्द्रमा वृश्चिक राशि में सांय 7:28 से संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-तुला, मंगल-सिंह, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात है। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 1:28 से आरम्भ होगा। महापात योग प्रातः 8:11 से दिन 1:20 तक है। आज श्री हरि जयन्ती है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:32 तक, चर 10:53 से 12:33 तक, लाभ-अमृत 12:33 से 3:54 तक, शुभ 5:34 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:52, सूर्यास्त 7:14

मेष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता हो सकती है।

कर्क
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यक्तिगत कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कन्या
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। घर-परिवार में महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

वृश्चिक
धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मकर
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। शुभ-मांगलिक कार्य में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।